Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper-IV
Date:-
Do-Next-class

Behaviourism
Contribution of Watson

(1) मन-शरीर समस्या (Mind-body Problem):-

वाटसन द्वारा मन-शरीर समस्या पर जो विचार व्यक्त किए गए हैं, वे व्यवहारवाद का एक प्रमाणक (hallmark) है। वाटसन तथा उनके अन्य सहयोगियों द्वारा मन या चेतन के अस्तित्व को स्वीकारा नहीं गया। इन लोगों का मत था की प्राणी में सिर्फ शरीर (Body) होता है, मन (mind) नहीं। वाटसन में पूर्णतः स्पष्ट किया था की चेतन एक ऐसी वस्तु है जिसे प्राणी न तो कभी देखता है, न स्पर्श करता है, न सूंघता है, न स्वाद लेता है। यह एक तरह की ऐसी पूर्व कल्पना है जिसकी जाँच संभव नहीं है। इस तरह से मन शरीर समस्या पर वाटसन की स्थिति एक अद्वैतवादी (monist) का था। मनोविज्ञान का इतिहास में अरस्तु तथा अन्य पुरातन ग्रीक दार्शनिकों के समय से ही मनोविज्ञान किसी न किसी रूप में मन-शरीर के द्वैतवाद (dualism) को स्वीकारा था। वाटसन के व्यवहारवाद ने इसे पूर्णतः नकार दिया, वाटसन मन के अस्तित्व को अस्वीकृत कर दिया। इससे वाटसन के व्यवहारवाद के लिए मन-शरीर समस्या (mind-Body problem) कोई समस्या नहीं रह गयी। व्यवहारवादीयों के लिए मात्र प्राणी की शारीरिक अनुक्रियाएं खासकर उद्दीपक के प्रति ग्रन्थियों एवं मांसपेशियों (muscles) की अनुक्रियाएं महत्वपूर्ण होती है। वाटसन के अनुसार व्यवहारवादी के लिए मस्तिष्किय अनुक्रियाएं महत्वपूर्ण नहीं होती है। वाटसन ने मस्तिष्क (brain) को एक 'रहस्य बॉक्स' (mystery box) कहा है। वाटसन ने अपने व्यवहारवाद में मन (mind) के अस्तित्व को स्वीकार

नहीं किया है, इसलिए वाटसन के मनोविज्ञान को 'मनरहित मनोविज्ञान' (mindless psychology) कहा गया है।

इस तरह से मन-शरीर समस्या के मन के अस्तित्व को अस्वीकृत कर तथा सिर्फ शरीर के अस्तित्व को स्वीकृत कर वाटसन ने जिस दृष्टिकोण का परिचय दिया है वह उपतात्विक दृष्टिकोण (epiphenomenal approach) तथा पूर्ण दैहिक अद्वैतवाद (complete physical monism) के दृष्टिकोण का उदाहरण है। उपतात्विक दृष्टिकोण से इस बात पर बल डालता है कि विज्ञान के लिए चेतन (consciousness) का कोई महत्व नहीं होता है तथा इसका कोई कारणात्मक भूमिका (causal role) भी नहीं होता है। वाटसन तथा उनके सहकर्मियों द्वारा मन (mind) या चेतना के अतिरिक्त अस्तित्व के विरोध में कुछ तर्क (arguments) जो प्रस्तुत किए गए हैं जो निम्नांकित है।

(i) जो लोग चेतन या मन को स्वीकार करते हैं, वे एक सतत् प्रक्रिया (continous process) मानते हैं। व्यवहारवादीयों का मत है कि नींद (sleep) में चेतना में एक रिक्ति (gap) होती है। जो लोग मन के अस्तित्व को मानते हैं, वे इस रिक्ति की व्याख्या करने में असमर्थ है।

(ii) अन्तर्निरिक्षणात्मक आँकड़ों के आधार पर संरचनावादियों ने मन के अस्तित्व को साबित करने की कोशिश की। व्यवहारवादी इस दावे के विरोध में तर्क देते हुए कहा है कि अन्तर्निरिक्षण (introspection) में महत्वपूर्ण चीज उद्दीपक (stimulus) होता है न कि तथाकथित चेतन अनुभूति (conscious experience)

(iii) व्यवहारवादीयों का मत है कि अगर मन के अस्तित्व को मानलिया जाता है तो यह भी मानना होगा कि इससे व्यवहार प्रभावित होता है। लेकिन मान्यता से अभौतिक घटनाओं घटनाओं (non physical events) जैसे- मन (mind) का शरीर (body) के साथ अन्तःक्रिया (interaction) की पूर्वकल्पना से ऊर्जा के संरक्षण के नियम (principle of conservation of energy) की अवहेलना होती है। यह नियम

संक्षेप में यह बतलाता है कि शारीरिक ऊर्जा (Physical Energy) की उत्पत्ति नहीं होती है। और न ही इसका नाश होता है बल्कि इसका रूपान्तरण (transformation) होता है। ऐसी ऊर्जा का संरक्षण भौतिक घटनाओं (Physical Events) में होता है तथा वे किसी तरह के अभौतिक घटनाओं (Non-Physical events) से सम्बन्धित नहीं होते हैं। अगर चेतन अनुभूति प्राणी की शारीरिक क्रियाओं (Bodyly activities) को प्रभावित करती है तो यह भी मान लेना होगा की वे अभौतिक तंत्र को ऊर्जा प्रदान कर ही चेतन अनुभूति को प्रभावित कर सकती है। लेकिन ऊर्जा के संरक्षण के नियम के अनुसार ऐसा नहीं सम्भव हो सकता है। अतः निष्कर्ष यह है कि कोई भी मानसिक प्रक्रिया या विचार द्वारा प्राणी की शारीरिक क्रियाएं प्रभावित नहीं होती है।

स्पष्ट हुआ कि वाटसन का व्यवहारवाद औपचारिक रूप से स्थापित कर एक ऐसा स्कूल है कि जो मनोविज्ञान को न केवल परिभाषित ही किया बल्कि दैहिक अद्वैतवाद (Physical monism) के दावे को मजबूत करते हुए मनोविज्ञान के विभिन्न समस्याओं पर अपना वैज्ञानिक विचार व्यक्त किया।

End.